शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लघुकथाओं में चित्रित नारी के विविध रूप

जयश्री झाँकल (शोधार्थी)
डॉ. शालिनी मूलचन्दानी (निर्देशक)
डूंगर कॉलेज
बीकानेर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत 'शोध पत्र' में लघुकथाओं के माध्यम से नारी जीवन में आये परिवर्तनों को प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन समय में नारी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था। वह देवी स्वरूप थी, परन्तु समय परिवर्तन में वह सिर्फ भोग की वस्तु बनकर रह गयी है। वर्तमान समय में यद्यपि नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, लेकिन फिर भी वह शोचनीय स्थिति में हैं। नारी परिवार, समाज व देश की नींव होती है। आधुनिक नारी स्वार्थों में अंधी होकर रिश्तों की गरिमा भूलती जा रही है। हर रिश्ते में स्वार्थ ही सर्वोपरि हो गया है। वह संतान उत्पन्न करने से भी पीछे हट रही है। घर के सदस्यों के प्रति उदासीनतापूर्ण व्यवहार अपनाने लगी है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर उन्मुक्त सेक्स, अंग प्रदर्शन व नशे जैसी विकृतियों को भी अपना रही है। पति-पत्नी के पवित्र रिश्ते में भी समझौतावादी प्रवृत्ति अपनायी जा रही है। अपने स्वार्थों में बच्चों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार किये जा रही है। नारी के द्वारा परम्परागत मूल्यों के बहिष्कार से द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। जिसे न तो वह खुलकर छोड़ सकती है और न पूर्णत: अपना सकती है। नारी सिर्फ रिश्तों के उलझन में फंसी हुई, जिनका आधार सिर्फ स्वार्थ ही है। नारी अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है, लेकिन उसके लिए प्राचीन मूल्यों को छोड़ना भी उचित नहीं है। हम भविष्य मे भावी पीढ़ी को संस्कारों के रूप मे क्या सहेजकर देंगे, यह नारी के लिए *चिंतन का विषय है ? शोध पत्र में लघु कथाओं में चित्रित नारी के विविध रूपों पर विचार किया गया है।*

भूमिका

नारी जो ईश्वर की बनायी अनुपम कृति है। नारी के बिना सृष्टि की कल्पना भी असंभव-सी प्रतीत होती है। नारी से ही नर की श्रेष्ठता है। नारी हर रूप में पूजनीय मानी गयी है। नारी अपने विविध रूपों जैसे मां, पत्नी, बहन, बेटी, बहू के रूप में सिर्फ देती ही आयी है। नारी की व्याख्या अनेक रूपों में हुई है। जैसे नारी दुर्गा होती है नारी की शक्ति को जगाने के लिए। वह लक्ष्मी होती है संसार को श्री सम्पन्न और सुन्दर बनाने के लिए। वह सरस्वती होती है साविद्ययया विमुक्तये की शिक्षा देने के लिए। वह धरती होती है सब सहने के लिए। वह आकाश होती है सभी को अवकाश देने के लिए। वह वायु होती है सबको जीवित रखने के लिए। वह जल होती है - सभी को शीतल और स्वच्छ रखने के लिए। वह प्रकाश होती है सभी को अंधकार से बचाने के लिए। संसार में इससे बड़ा कोई नहीं है। यह 'अणोरणीयन महतोमहीयान' होती है। इसीलिए नारी को सदा पूज्या माना गया है।1 नारी को विविध गुणों से मंडित करके ईश्वर ने धरती पर उतारा है। नारी को नर से भी श्रेष्ठ बताया गया है, क्योंकि नारी को संतान उत्पन्न करने की शक्ति ईश्वर द्वारा प्रदान की गई है। इसीलिए नारी की तुलना ईश्वर से भी की गई है

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नारी और नारायण में कछु नहीं है भेद
दोऊ में कोऊ को जानिए, दूर होय निर्वेद।2

नारी मे दया, ममता, प्रेम, विश्वास, सहनशीलता, लज्जा जैसे अनेक गुण होते हैं। साने गुरूजी नारी की प्रंशसा करते हुए लिखते हैं कि, "भारतीय स्त्री त्याग, असीम श्रद्धा और अमर आशावाद का प्रतीक है जिस प्रकार कोलाहल किए बिना प्रकृति फूल खिलाती है, उसी प्रकार स्त्रियाँ परिवार में मौन रूप से परिश्रम करके आनंद निर्माण करती है। परिवार में सबकी सेवा करते हुए अपना सर्वस्व परिवार को समर्पित करती है। त्याग और प्रेम उसके आदर्श रहे हैं। स्त्री का जीवन एक चिरयज्ञ है और स्त्री मूर्त कर्मयोग।"3

समय के साथ-साथ नारी के जीवन व नारी की दशा में परिवर्तन होते रहे हैं। आर्यों की सभ्यता और संस्कृति के प्रारंभिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत सुदृढ़ की। नारी शिक्षा के साथ ही पति के साथ यज्ञ आदि में भी सहभागीदार हुआ करती थी। वैदिक काल में परिवार के समस्त कार्यों में नारी को समान अधिकार प्राप्त थे। नारी समाज का एक ऐसा स्तम्भ थी, जो व्यक्ति और समाज के स्तर पर अनेक भूमिकाओं का निर्वाह एक साथ करती थी। रामायण काल तथा महाभारत काल में भी स्त्रियों की श्रेष्ठता का गुणगान बहुत उच्च स्वरों में किया गया है। 'रामायण' की सीता और 'महाभारत' की द्रोपदी पहली ऐसी नारियां थी जिन्होंने अपने ससुराल का घर छोड़कर अपने पतियों के साथ बाहर की दुनिया को देखा था। सामंत काल तक आते-आते नारी अबला और पराश्रिता हो चुकी थी। केवल उसका सौन्दर्य पुरूषों को वश में करने का एकमात्र उपाय था। मुगलकाल के अंत तक आते-आते नारी का अस्तित्व गौण हो गया । वह व्यक्ति से वस्तु बन गई। पर्दा-प्रथा, बहु-विवाह, वैधव्य, सम्बन्ध विच्छेद, नारी अशिक्षा आदि आदर्श बनकर रह गए।4

विविध आक्रमणों व विदेशी आक्रांताओं के कारण पुरूष सत्ता में नारी शक्ति छिन्न-भिन्न होने लगी। अब नारी देवी न होकर नरक का द्वार कहीं जाने लगी। पुरूष ने अपनी सत्ता को बचाये रखने के लिए हर तरह से नारी का शोषण किया। कभी पुत्र बनकर माँ पर, कभी पति बनकर पत्नी पर, तो कभी पिता बनकर पुत्री पर अंकुश रखा। अपने सभी निर्णयों के लिए नारी पुरूष पर ही निर्भर रहने लगी। उस समय की नारी स्थिति पर यह दोहा पूर्णतया सटीक बैठता है-

"युगों-युगों से ये जगत, ठहरा पुरूष प्रधान,
कदम-कदम पर रोकता, नारी का उत्थान।"5

धीरे-धीरे समय परिवर्तन के साथ नारी की दशा में परिवर्तन होने लगा। आजादी के बाद अनेक महिला सुधार सम्बन्धी आंदोलनों को चलाया गया, जिनके फलस्वरूप सती प्रथा, बाल विवाह, बहु-विवाह, 'अनमेल विवाह व दासी प्रथा' जैसी कुरीतियों को समाप्त किया जाने लगा। अब महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगी। वह शिक्षित होकर पुरूष के समान अधिकार प्राप्त करने की चाह रखने लगी। नारी पुरूष सत्ता में घुसपैठ करती हुई नजर आने लगी। आधुनिक समय की नारी पूर्णतया बदल गई है। नारी की इस बदलती हुई तस्वीर को डॉ. मधु संधु ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है, "वह न पत्थर की देवी है और न लोगों का सत्यानाश करने वाली राक्षसी, अब न वह सीता की तरह भूमि समाधि लेगी न अग्नि परीक्षाएं देगी, न कुएं में कूदेगी, न जल मरेगी, न छल से उसकी हत्या होगी। वह आग पर चलना सीख गई है और जो आग पर चलना सीख लेता है वह कुंदन

बन जाता है। वह नहीं मानती कि मर्द औरत को छूता है तो उसका उद्धार कर देता है।"6

यह सही है कि आधुनिक नारी पुरूष आधिपत्य का खंडन करने लगी है। वह जीवन निर्वाह के लिए पुरूष की अनिवार्यता का भी विरोध करने लगी है। वह पूर्णत: स्वतंत्र जीवन जीने की आकांक्षी बन रही है। "व्यक्तित्व की समझौतावादी प्रवृत्ति, श्रद्धा, ममत्व और भावना के मूल्यों को नारी तिलांजलि दे चुकी है। वह अपनी जिन्दगी अपनी तरह से जीना चाहती है। दिशा-निर्देश व आलोचना के लिए उठी हुई ऊँगली उसे सहन नहीं है।"7

लघुकथा में नारी के चित्रित विविध रूप

नारी के इस बदलते हुए स्वरूप को साहित्य के अन्तर्गत भी वर्णित किया गया है। आधुनिक समय की लोकप्रिय विधा के रूप में प्रचलित लघुकथा विधा के अन्तर्गत भी, नारी जीवन के विविध रंग देखने को मिलते हैं। मुख्य रूप से दो रूपों को लिया जा सकता है- 1 प्राचीन संस्कारों को अपनाए हुए नारी व 2 आधुनिकता के रंग में रंगी हुई नारी।

नारी के इन दोनों रूपों को लघुकथाओं के अन्तर्गत बखूबी चित्रित किया गया है। आधुनिक समय में नारी के स्वरूप में आये परिवर्तन को उसके विविध रूपों जैसे- माँ, पत्नी, पुत्री, बहू, व बहन के रूप में समझा जा सकता है।

1. माँ के रूप में - 'माँ' शब्द में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, सृष्टि का समस्त रहस्य समाया हुआ है। 'माँ का स्थान बच्चे के लिए सर्वोपरि होता है, वही उसकी प्रथम गुरू भी होती है। लघुकथा के अन्तर्गत 'माँ' के दो रूप देखने को मिलते हैं - क निःस्वार्थ प्रेम रूपी 'माँ' व (ख) आधुनिक स्वार्थों से घिरी मां।

क निःस्वार्थ प्रेम रूपी 'माँ' - माँ की छवि पूर्णतया निःस्वार्थ होती है। ऐसी ही छवि को 'माँ' लघुकथा में चित्रित किया गया है -

"वह बेरोजगार युवक था। समाज के उपालाम्भों और पत्नी के ताने से अब उसने किसी तरह का काम करने का निश्चय कर एक दूसरे शहर के लिए प्रस्थान कर दिया था। जाते वक्त उसने पत्नी से पूछा था कि वह उसके लिए क्या लायेगा। पत्नी ने व्यंग्य में कहा था- 'हीरा जवाहरात', छोटा मुन्ना 'तार' (कार) लाने की जिद्द कर रहा था। बाहर निकलकर जब उसने माँ के पांव छुए थे, माँ ने कपड़े में बंधे एक सोने का आभूषण और आशीर्वाद देते हुए कहा था, ले बेटे यह सम्पत्ति का सिंगार और विपत्ति का आहार है। जब जैसा वक्त आए उपयोग करना और लौटते वक्त मेरे लिए यदि अतिरिक्त पैसा हो तो मोटे अक्षरों वाली 'रामायण', सहारे के लिए एक छड़ी लेते आना। अब मैं इन आंखों से 'रामायण' के छोटे अक्षर नहीं पढ़ पाती हूँ।"8

एक माँ स्वयं भूखी रहकर भी अपने बच्चों को भरपेट खाना खिलाती है। माँ की इस निःस्वार्थ छवि को अनेक लघुकथाओं के अन्तर्गत प्रकट किया गया है।

ख आधुनिक स्वार्थों से घिरी माँ - वर्तमान समय में आधुनिकता की आड़ में स्वार्थों का बोलबाला है। स्वार्थी रंग में हर रिश्ता अपनी गरिमा को भूलता जा रहा है। 'माँ' का निःस्वार्थ प्रेम भी कहीं न कहीं इस स्वार्थी प्रवृत्ति में सिमटता हुआ नजर आ रहा है। ऊषा जैन शीरी की लघुकथा 'ममता' में आधुनिक माँ के इस स्वरूप को चित्रित किया गया है -

"मैं लेडीज क्लब की एक जरूरी मीटिंग में जा रही हूँ। बाबा उठे तो उसे खिलौनों से बहलाना।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ज्यादा रोयें तो कल लाई हुई टाफियों में से एक खिला देना। उससे बाबा सो जाएगा।

पुल के नीचे से इस बीच बहुत-सा पानी बह गया था। तीस साल बाद वृद्ध माता-पिता अपने इकलौते बेटे को डिएडिक्शन सेंटर ले जा रहे थे। मनःचिकित्सक ने जब माँ से जानना चाहा कि उनके बेटे को नशे की लत कैसे पड़ी। तो माँ अपराध बोध से ग्रस्त फूट पड़ी फिर खामोश हो गई। पति इसे बेटे के प्रति माँ की ममता समझ पत्नी की ओर करूणा से देखने लगे।9

2 पत्नी के रूप में

क संस्कारी पत्नी : पति-पत्नी का रिश्ता सफल परिवार का आधार-स्तम्भ है। माँ के बाद पुरूष के लिए उसके जीवन में सबसे अहम् रिश्ता पत्नी का होता है। हिन्दू धर्म में पत्नी को पति की वामंगी कहा गया है पति के शरीर का बायां हिस्सा। इसीलिए वह अर्धांगिनी भी कहलाती है। संस्कारी पत्नी हर रूप में, हर स्थिति में अपने पति पर विश्वास रखती है। वह सिर्फ अपने पति से ही प्रेम करती है, अन्य से नहीं। सतीशराज पुष्करणा की लघुकथा 'विश्वास' में ऐसी ही पत्नी को चित्रित किया गया है। लघुकथा में बीमार पत्नी की रोज वाली तकलीफ देखकर उसे जीवन से मुक्त करने के लिए जहर की शीशी खरीदी। वह नहीं चाहता था कि उसकी पत्नी और अधिक पीड़ा सहन करे। घर पहुंचकर वह पत्नी से दवाई लेने की बात पूछता है तो पत्नी कहती है, "इतनी दवाईयाँ तो रखी है, किसी से भी कुछ लाभ तो नहीं हुआ ? मैं नहीं खाऊंगी अब कोई भी दवा।" पति बोला, "आज मैं तुम्हारे लिए बहुत अच्छी दवा लाया हूँ। इससे तुम जल्दी अच्छी हो जाओगी।" पत्नी पुनः मुस्कुराई, "तुम नहीं मानोगे। अच्छा लाओ अब तुम मुझे जहर भी दे दो, तो भी पी लूंगी।" इसी क्षण शीशी पति के हाथ से छूटकर जमीन पर गिरकर चूर-चूर हो गयी।"10

ख आधुनिक पत्नी : समय परिवर्तन के साथ पत्नी के प्रेम में भी परिवर्तन आने लगा है। अर्थ के जाल में सभी रिश्ते अपनी गरिमा भूलते जा रहे हैं। पत्नी भी अब पति की सम्पत्ति में आधा हक मांगने लगी है। वह पति के इशारों पर नहीं चलना चाहती। वह आजाद पंछी की तरह उड़ना चाहती है। 'बदले तेवर' में आधुनिक पत्नी के इस रूप को दर्शाया गया है -"आ रही है इक्कीसवीं सदी, तेरी सारी हेकड़ी घुसड़ जायेगी। औरत को तुमने गुलाम समझ रखा है.... अठारहवीं सदी से पहले की वह मोमवाली गुड़िया। जिसे जब चाहो जैसा आकार दे दो अपनी मनमर्जी से, जब नहीं थी बेचारी में, उस समय उसके मुंह से आवाज .....।

अरे, अभी तो बीसवीं सदी ही बाकी है, देख नहीं रहे हो औरत की ताकत 'वह' पुरूषों की नकेल थामने लगी है।"11 आधुनिक समय में पति यदि बहुत व्यस्त है या पत्नी को समय नहीं दे पाता या कहीं मनोरंजन करने में व्यस्त है तो आधुनिक नारी भी पीछे नहीं है - "बड़े साहब देर रात को घर लौटते हैं, हर रोज! व्यापारियों और ठेकेदारों ने उनके मनोमोद के लिए अच्छा-सा इंतजाम कर रखा है एक जगह। वहाँ सारी सुविधाएं मयसुरा और सुन्दरी उपलब्ध रहती है, उनके लिए। इधर मेम साहिबा अकेले बड़े बंगले में रहती ? इन्होंने भी अपने मनोमोद के लिए एक इंतजाम कर रखा है। चौकीदार के ग्रेजुएट बेरोजगार लड़के के साथ देर रात तक ताश खेलती है, शराब पीती है और .....।"12

ग बहू के रूप में -

1 संस्कारी बहू - बहू लाने की तमन्ना हर सास की होती है। कहीं न कहीं हर सास बहू में स्वयं

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

को ही तलाशती है। एक अच्छी व संस्कारी बहू वही होती है जो पति के साथ ही सभी रिश्तों को भी उतना ही प्रेम व सम्मान दे। बहू के स्वरूप को अनेक लघुकथाओं में प्रकट किया गया है। शिखा कौशिक की 'मेरी बहू' एक संस्कारी व आदर्श बहू की लघुकथा है- सास बहू की प्रशंसा करती हुई कहती है कि, "चाय पानी की बात छोड़ो विनोद के पिता जी को जब फालिश पड़ा बहू ने जी जान से सेवा की। मुझे तक घिन्न आती थी पर बहू ने कभी उन्हें गंदे में पड़ा रहने दिया। पड़े-पड़े ज़ख्म हो गये थे उन्हें ... बहू खुद ज़ख्मों पर दवा लगाती। उनकी मौत पर विनोद से भी ज्यादा रोई थी। सच कहूं दीपक लेकर भी ढूंढने निकल जाती तो ऐसी बहू न मिल पाती। मैं तो निश्चित हूँ यदि बिस्तर पकड़ना भी पड़ गया तो मेरी बहू मुझे गंदे में न सड़ने देगी।"13

2 आधुनिक बहू - आधुनिक बहू सास-ससुर में माँ-बाप का स्वरूप नहीं देखती है और न ही उनकी हाँ में हाँ मिलाना पंसद करती है। आधुनिक बहुएं अपनी स्वतंत्रता में खलल न पड़े, इसके लिए बुजुर्ग सास-ससुर को वृद्धाश्रम में डालने से भी नहीं हिचकती हैं और अगर साथ में रहते हैं तो उन्हें कई तरह की यातनाएं देती है। सुरेन्द्र गुप्त की लघुकथा 'कहीं बहू ने देख लिया तो' आधुनिक बहू के बदले स्वरूप को प्रकट करती है- "हाँ बेटा यही समझ लो, बस जीवन के अंतिम पायदान पर हूँ। मुझसे कहती है, उबली हुई सब्जियाँ खाओ। अब बना कर दे तो ही तो खाऊँ। कभी टाईम पर खाना नहीं देती। कभी-कभी चाय लेने का मन करता है तो अपना मन मसोस कर रह जाता हूँ। ठीक से कपड़े भी नहीं धोती, मैले-कुचैले कपड़े डालने का मन नहीं करता। कई बार तो इतनी जली-कटी सुनाती है कि बर्दाश्त नहीं होता; बस मन करता है कि कहीं चला जाऊं। अगर चला गया तो फिर इनकी बेइज्जती होगी।"14

4 पुत्री के रूप में :

क संस्कारी पुत्री : बेटी की तुलना तुलसी के पौधे से की गई है। जिस प्रकार तुलसी का पौधा घर में सुख शांति व खुशहाली लाता है, ठीक उसी प्रकार बेटी भी घर की रौनक, घर की इज्जत व घर की लक्ष्मी होती है। बेटी हमेशा माँ-बाप की चिंता करती है, शादी के बाद भी। रामकुमार घोटड़ की लघुकथा 'परायाधन' में पुत्री के इसी रूप को व्यक्त किया गया है -

"बेटी को जैसे ही फून किया तो बेटी अपने बेटे की सगाई को बीच में छोड़कर भाड़े की गाड़ी लेकर आ गई और अम्मा को जबरन गाड़ी में बिठाकर अपने साथ ले गई। गाड़ी में बैठते समय अम्मा रोते हुए सोच रही थी जिसे पराया धन समझ कर पाला आज वहीं अपनी निकली।"15

ख आधुनिक बेटी - जहाँ पहले बेटी को बोझ समझकर कोख में ही मार दिया जाता था अब वैसी स्थिति कम होती जा रही है। आधुनिक समय में बेटी वह सभी कार्य कर रही है, जो कि एक बेटा करता है। वंश चलाने या मृत्यु पर मुखाग्नि देने का कार्य भी आधुनिक बेटियाँ कर रही है। पिता की सम्पत्ति में हक का अधिकार भी बेटियों को मिलने लगा है। जहाँ बेटियां मां-बाप पर बोझ नहीं बनना चाहती है, वहीं कुछ ऐसी भी बेटियां है जो माता-पिता से स्वयं ही दहेज की मांग भी करती है। मनोज अबोध की 'दहेज' लघुकथा में इसी आधुनिक बेटी को चित्रित किया गया है-

"या ..... ह....., कपूर फैमिली नहीं, मुझे अपनी शादी में दहेज चाहिए ... ज्वैलरी के अलावा कार, आरओ, एसी, होम थियेटर, मेगाफ्रिज ..... सब कुछ एक्सक्लुसिव और मेरी पसंद का .... मैं

भुक्खड़ों की तरह एक सूटकेट लेकर ससुराल नहीं जाने वाली।"16

5. बहन के रूप में -

क संस्कारी बहन - भाई-बहन का रिश्ता और बहन-बहन का रिश्ता बहुत अहम् होता है। बहन अपने भाई से अत्यधिक प्रेम करती है। उसके अच्छे-बुरे के बारे में हमेशा चिंता करती है। वह भाई से सिर्फ रीति-रिवाजों के अनुसार ही आशा रखती है। आलोक कुमार सातपुते की 'हक' लघुकथा में बहन का आदर्श रूप प्रकट हुआ हैं-

"तुम्हारे पास इतनी साड़ियां हैं कि कइयों की तो तुमने तह भी नहीं खोली होगी फिर तुम्हारा तीज पर्व पर एक अदद साड़ी के लिये मायके जाना और वह भी एक हजार रुपये का पेट्रोल खर्च करके और अपने भाई के बच्चों के लिए पांच सौ का उपहार ले जाना.... बात कुछ समझ नहीं आयी। कार चलाते हुए पति ने पत्नी से कहा। थोड़ा रूककर पति ने आगे कहा नियमतः तो तुम्हारे उस भाई को खुद तुम्हें लिवाने आना था पर वह नहीं आया। अपने उस भाई से तुम कितने रुपये की साड़ी की उम्मीद करती हो, वह तो ज्यादा से ज्यादा पांच सौ रूपल्ली की साड़ी थमायेगा। 'देखिये जी इस पर्व पर भाई से साड़ी प्राप्त करना मेरा हक है और हक को हासिल करने समय स्वाभिमान और लागत को परे रख देना चाहिए। पत्नी ने शांत स्वरों में उत्तर दिया।"17

ख आधुनिक बहन : आधुनिक समय के व्यस्तता भरे जीवन में सभी कुछ बदल रहा है। ऐसे में रिश्ते भी पहले की तरह नहीं रह गए हैं। रक्षा बंधन जैसे पवित्र त्यौहार की परिभाषा भी वर्तमान समय में बदल गयी है। आधुनिक बहन कहती है कि, "आंटी! मैं नहीं जाती अब राखी-वाखी बांधने। नारियल, राखी, मिठाई, उपहार खरीदने में चार-पांच सौ रुपये का फिजूल खर्चा हो जाता है। भाग-दौड़, आने-जाने का झंझट अलग। उस पर खाने-पीने, नेग-उपहार की व्यवस्था में थकावट के मारे भाभी का मुंह अलग बना रहता है यानि दोनों परिवार बराबर परेशान रहते हैं। मैंने पिछले हफ्ते ही एक अच्छी सी राखी पोस्ट कर दी थी। अब तो मनी आर्डर भी पहुंचता होगा।"18

इस प्रकार लघुकथाओं के माध्यम से नारी के संस्कारों से मंडित व आधुनिकता में रंगे दोनों रूपों के दर्शन होते हैं। निःसंदेह "नारी स्वतंत्र व्यक्तित्व पाने के लिए प्राचीन मूल्यों को तोड़कर अपना निजी जीवन जीना चाहती है। इस प्रक्रिया में वह गहरे अंतर्द्वन्द्व से भी गुजरती है। अपने परिवेश के प्रति उसके भीतर छटपटाहट है, असंतोष है अपने आस-पास व्याप्त जड़ता को तोड़ने की ललक है, पर अभी भी वह जड़ता और न तोड़ पाने के बीच घुट रही है।"19

नारी की घुटन का मुख्य कारण यह है कि उसे केवल रिश्तों में उलझा दिया गया है, उसका स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं रह गया है। जिस दिन वह माँ, बेटी, बहन, जैसे सभी रिश्तों से ऊपर एक व्यक्ति के रूप में पहचानी जाएगी शायद उस दिन उसकी यह छटपटाहट आत्मसंतोष में बदल जाएगी। साथ ही नारी यदि आधुनिकता का अंधानुकरण न करे परम्परागत मूल्यों को सहेज कर रखे तो शायद वह और अधिक संतुष्टि महसूस करेगी।

निष्कर्ष

अंत में आधुनिक नारी की बेचैनी को निवेदिता की कविता 'बेचैन स्त्री' में प्रकट किया है कि आज की नारी क्या चाहती है-

"यह कैसी विडम्बना,
कि हम सहज अभ्यस्त

एक मानक पुरूष दृष्टि से देखने
स्वयं की दुनिया
मैं स्वयं को स्वयं की दृष्टि से
देखते मुक्त होना चाहती हूँ
अपनी जाति से क्या
है मात्र एक स्वप्न के स्त्री के
लिए घर संतान और प्रेम ?
क्या है ?

एक स्त्री यथार्थ में जितना अधिक घिरती जाती है इससे इतना ही अमूर्त होता चला जाता है, सपने में वह सब कुछ, अपनी कल्पना में हर रोज एक ही समय में स्वयं की हर बेचैन स्त्री तलाशती है घर, प्रेम और जाति से अलग अपनी एक ऐसी जमीन जो सिर्फ उसकी अपनी हो, एक उन्मुक्त आकाश जो शब्द से परे हो, एक हाथ जो नहीं उसके होने का आभास हो।"20

आधुनिक नारी की पीड़ा को इस कविता में चित्रित किया गया है। साथ ही आधुनिक नारी से यह उम्मीद भी है कि वह नारी के परम्परागत मूल्यों का विघटन करके आधुनिकता की अंधी दौड़ में शामिल होकर अपने अस्तित्त्व को खतरे में न डाले। भविष्य में भावी पीढ़ी के सृजन के यह अत्यंत आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नारी जीवन की लघुकथाएँ, डॉ. (इं.) केदारनाथ अग्रवाल, पृष्ठ 110
2. नारी जीवन की लघुकथाएं, डॉ..(इं.) केदारनाथ अग्रवाल, पृष्ठ 106
3. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, सौ. मंगल कप्पीकरे, पृष्ठ 19
4. मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तीकरण, डॉ. कंचन गोयल, पृष्ठ 11
5. इन्टरनेट - दोहे (नारी के चंद दोहे, सचिन देव) जुलाई 20, 2015
6. महिला उपन्यासकार, डॉ. मधु संधु पृष्ठ 10
7. दसवें दशक की कहानी, डॉ. बनवीर प्रसाद शर्मा, डॉ. कृष्णकांत भारद्वाज, पृष्ठ 17
8. कथादेश, सं. सतीशराज पुष्करणा, पृष्ठ 148
9. इंटरनेट pustak.org, दो सौ ग्यारह लघुकथाएं,- डॉ. उषा जैन शीरी
10. आधुनिक हिन्दी लघुकथाएँ, त्रिलोक सिंह ठकुरेला, पृष्ठ 32
11. नारी जीवन की लघुकथाएँ, डॉ. (इं) केदारनाथ अग्रवाल, पृष्ठ 29
12. कथादेश, सं. सतीशराज पुष्करणा, पृष्ठ 131
13. shikha kaushik.blogspot.com/2013/10
14. यहाँ सब चलता है, डॉ. सुरेन्द्र गुप्त, पृष्ठ 99
15. एक सौ इक्कीस लघुकथाएं, रामकुमार छोटड़, पृष्ठ 112
16. इंटरनेट - लघुकथा डॉट कॉम, मनोज अबोध 'दहेज' लघुकथा
17. इंटरनेट, ब्लॉग पोस्ट डॉट इन से, बैताल फिर डाल पर (लघुकथा संग्रह) आलोक कुमार सातपुते
18. भविष्य से साक्षात्कार, इन्दु गुप्ता, पृष्ठ 81
19. आधुनिक हिन्दी कहानी : नारी जीवन मूल्य, डॉ. कृष्णकांता भारद्वाज, पृष्ठ 126
20. दैनिक भास्कर, मधुरिमा (समाचार-पत्र), 08.03.2017